॥ ओ३म् ॥

ईश्वर ने दुनियां क्यों बनाई ?

शास्त्रार्थ महारथी

स्व० पं० रामचन्द्र जी देहलवी

॥ ओ३म् ॥

ईश्वर ने दुनियां क्यों बनाई ?

व्याख्याता :—

शास्त्रार्थ महारथी पं० रामचन्द्र देहलवी

चतुर्थवार ५०००] अप्रैल १९९४ [मूल्य २)५० रु:

॥ ओ३म् ॥

प्रकाशकीय निवेदन

पूज्यपाद प्रातः स्मर्णीय पं० रामचन्द्र जी देहलवी आर्य जगत् के महान् दार्शनिक एवं आर्य सिद्धांतों के मर्मज्ञ विद्वान् थे। पं० जी की जिह्वा पर सरस्वती का साक्षात् निवास था। महर्षि दयानन्द द्वारा रचित सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कारविधि, वेदभाष्य आदि ग्रन्थों को पं० रामचन्द्र देहलवी जी ने जिस मनोयोग से पढ़ा और उन पर विचार किया ऐसी मिसाल आर्य जगत् में दूसरी नहीं मिलती। बड़ी गहराई से वैदिक सिद्धांतों का अनुमोदन व मडन करते हुए विरोधियों के बड़े से बड़े आरोपों का वे बड़ी सरल भाषा में उत्तर देते थे। पं० जी ने अपने जीवन में हजारों शास्त्रार्थ किये, हजारों व्याख्यान दिए और देश के एक कौने से दूसरे कौने तक घूम-घूम कर वैदिक धर्म का प्रचार किया। उनके भाषणों में एक जादू की झलक दिखाई देती थी जो सुनने वाले पर तुरन्त प्रभाव डालती थी। उनके अनेक भाषणों में से एक भाषण "ईश्वर ने दुनियां क्यों बनाई" प्रकाशित करते हुए हमें प्रसन्नता हो रही है। हमें विश्वास है कि आर्य जनता पं० जी के इस भाषण का अधिक से अधिक प्रचार व प्रसार करेगी।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा पं० जी के अन्य भाषणों व शंका समाधान आदि का प्रकाशन करने का प्रबन्ध कर रही है। हमें विश्वास है कि आर्यजन अधिक से अधिक पं० जी के इन विचारों का प्रचार व प्रसार कर अपने कर्त्तव्य का पालन करेंगे।

रामगोपाल शालवाले
प्रधान
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
(महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान
नई दिल्ली

दिनांक
२५-११-८५

भूमिका

जीवन में कुछ घटनाएं ऐसी घटती हैं जिन्हें आंखों से कई बार देखने का मोह उठाकर नहीं रखा जा सकता। ऐसे ही शब्दों की भी अपनी दुनियां है। कभी-कभी के बोल बड़े मूल्यवान् बोल होते हैं और उन्हें जितनी बार सुना जाय थोड़ा है। ऐसे बोल अपने प्रियजनों के हो सकते हैं अपने राजनैतिक या धार्मिक नेताओं के हो सकते हैं।

उन्हीं 'बोलों' को सुरक्षित रखने के लिए आर्य समाज दीवानहाल की ओर से पंडित जी के ७९वें जन्म दिवस पर उनको एक मशीन भेंट की गई थी जिससे कि उनके 'धार्मिक बोल' सुरक्षित किये जा सकें। मेरे और बहुत से अन्य मेरे जैसे लोगों के लिए उनके बोल प्रियजनों के 'बोल ही हैं।

अत: मैं अपनी ओर से और उन सभी की ओर से जो पंडित जी को अपना अत्यन्त मान्य व प्रियजन मानते हैं और अपना धार्मिक पथ प्रदर्शक भी मानते हैं आर्य समाज दीवानहाल का व पदाधिकारियों का धन्यवाद करता हूं कि उन्होंने धर्म प्रचार के क्षेत्र में एक अत्यन्त महत्व पूर्ण पग उठाकर सभी धर्म प्रेमियों को लाभान्वित किया है।

यह प्रथम व्याख्यान पुस्तकाकार आपकी सेवा में प्रेषित है।

विमलचन्द्रार्य

॥ ओ३म् ॥

ईश्वर ने दुनियां क्यों बनाई?

ओ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातःपतिरेक आसीत्
स दाधार पृथिवींद्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ।
ओ३म् य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य
देवाः यस्यच्छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम।
ओ३म् शान्तिःशान्तिःशान्तिः ।

आदरणीया बहिनो व प्यारे भाइयो ।

आज का मजमून (विषय) है कि परमात्मा ने दुनियां क्यों पैदा की ? कई बार यह सवाल मेरे सामने आया है और हत्तुलबसा (यथा-शक्ति) प्रयत्न किया है कि मैं उनको इस सम्बन्ध में तसल्सी बख्श उत्तर दूं । आज भी हमारे एक मेहरबान ने कहा कि "दिल में मेरे, यह ख्याल उत्पन्न होता है कि जब वह अपने आप में कोई कमी नहीं रखता । पूर्ण है ! ! (पर्फेक्ट) (perfect) है ! ! ! तो दुनियां क्यों बनावे ?" मैंने कहा "यही दलील बनाने की जरूरत को साबित करती है यानी उसका हर तरह पूर्ण होना ।"

आप कहेंगे "कैसे ?" जिसके अन्दर कोई ख्वाहिश नहीं, कोई इच्छा नहीं, कोई कमी नहीं लेकिन पूर्णता है हर प्रकार की । इल्म भी उसका पूरा है, शक्ति भी उसमें पूरी है, और व्यापकता भी उसकी पूरी है, तीनों प्रकार से जो पूरा है यानी परमात्मा—तो बतलाइये वह अपनी इस पूर्णता को किस प्रकार सफल करे ? अपने इस कमाल

को किस प्रकार से बाकार करे ? क्योंकि किसी शय का होना महज होने के लिए हो तो उसका होना न होने के बराबर होता है—जरा गौर कीजिए मेरे अल्फाज (शब्दों) पर। किसी वस्तु का होना महज होने के लिए हो तो उसका होना न होने के बराबर होता है। परमात्मा पूर्ण है। अपनी पूर्णता का क्या लाभ ? अपने पूरे आलिम होने का क्या फायदा ? सूरज से प्रकाश हमको मिलता है, इस वल्ब से भी प्रकाश हमें मिलता है। हम पूछते हैं कि इसका इसके अलावा—कोई और लाभ है कि आपको रोशनी दे रहा है ? पूर्णता का होना इसी चीज में पूरा होगा कि जितना ज्यादा फायदा उसकी पूर्णता यानी कमाल से दूसरे को हो जाय उतना ही उसका वजूद सफल है और जितना न पहुंचे उतना ही असफल है। आप कल्पना कीजिए कि काई एक वजूद है और उसके अलावा और कोई नहीं है और वही है तो मैं कहूंगा "उसका होना न होने के बराबर है।" मिसाल के तौर पर अगर एक बड़ा हकीम है। लेकिन बीमार कोई नहीं है दुनियां में और न दवाईयां हैं तो मुझे बताइए कि हकीम के होने का क्या फायदा है जब कोई मरीज नहीं और कोई दवा नहीं है तो किसके लिए दवा दे और क्यों दे ? जो मास्टर है (पढ़ाने वाला) अगर कोई लड़के पढ़ने वाले नहीं हैं तो मास्टर का जीवन बेकार है, बाकार नहीं है। इसलिए विद्वान् लोगों ने कहा है कि जो अपने अन्दर कोई गुण रखता है उस गुण की सफलता अन्य को लाभ पहुंचाने में है। अपनी गरज तो हम पूरी करते ही हैं लेकिन अपने कमाल से गैरों की गरज को पूरा करना और उनके लिए सहारा बनना यह ऊंचे दर्जे की चीज है। एक अंग्रेजी का बहुत छोटा सा जुमला है (एव्री आपार्चुनिटी टु हेल्प इज ए ड्यूटी (Every opportunity to help is a duty. प्रत्येक अवसर जो हमें सहायता का मिल जाए वह हमारा कर्त्तव्य है, जो मौका भी हमें मिल जाए किसी की मदद करने का वह हमारा

फर्ज है क्योंकि हम अपने गुण से कुछ तो फायदा पहुंचाएं, अपने कमाल से उसको लाभान्वित करें। तो वह क्या करेगा ? जहां वह अपना होना सफल करेगा वहां उसका जीवन मार्ग भी सरल हो जायेगा जिसकी वह मदद करेगा। माता और पिता उसका नमूना हैं। मैं यह पूछता हूं कि 'इतने स्कूल और कालिज खुले हैं क्या किसी लड़के ने कोई दर्खास्त दी कि 'अब हम तैयार हो गये हैं, होते जा रहे हैं, मेहरबानी करके हमारे लिए अब स्कूल और कालिजिज खोलिए"। "नहीं न"। तो कौन सोच रहे हैं ? बुद्धिमान् सोच रहे हैं, अक्लमन्द सोच रहे हैं या दूसरे लब्जों में यह कहिए कि जिन्होंने इल्म का मजा हासिल किया है उन्होंने अपना कर्त्तव्य समझा है। क्या ? "कि वह जो हमारे अधीन हैं, और विद्या से विहीन हैं, उनको हम उसी आनन्द का मजा चखाएं कि जिस आनन्द का मजा हम विद्या और इल्म हासिल करने के बाद ले रहे हैं" वे उससे खाली न रहें जो हमारे मातहत हैं। इसलिए मां बाप अपने बच्चों को बगैर दर्खास्त के, स्कूल कायम करने के लिए प्रयत्न कर रहे हैं कि खुलने चाहिएं, यहां खुलने चाहिएं। क्यों क्या जरूरत है ? अरे वह विद्वान् हो ही चुके हैं, उम्र उनकी खत्म होने को है। क्या पता दुनियां से थोड़े ही दिनों में चले जाएं ? तो भी वह कोशिश क्यों कर रहे हैं कि बच्चों के लिए स्कूल खुलना चाहिए ?

सिर्फ इस लिये कि जिस प्रकार इन्होंने विद्या प्राप्त करके आनन्द उठाया है, उसी प्रकार इनकी सन्तान भी विद्या प्राप्त करके आनन्द भोग करें।

परमात्मा सर्वज्ञ है। बहुत से लोग इन लब्जों में कहा करते हैं कि "परमात्मा ने अपने सर पर यह सरदर्दी क्यों ली है कि दुनियां बना रहा है ? बैठा रहता मौज में। कुछ करने की जरूरत नहीं थी, कोई चाह नहीं थी, कुछ नहीं थी" मैं कहता हूं "सबसे बड़ी चाह यह है कि

मेरा अपना होना सफल हो जाए, बाकार हो जाए, बेकार न रहे। बेकार होने से मैं निकम्मा हो जाता हूं।" मेरा बोलना तब सफल होता है जब सुनवे वाले हों। क्यों कहा करते हैं मन्त्री जी 'अभी और आने दीजिये आदमियों को। यहां आदत पड़ी हुई है दस बजे से आरम्भ करने की। लोग फारिग होकर आते हैं—तो क्या मतलब? मेरे बोलने को सफल करने के लिए वे चाहते हैं कि श्रोतागण आ जाने चाहिए। उसके वगैर वह सफल नहीं होता है। इसी तरह परमात्मा का वजूद कहां सफल होगा? वह आलिम है। वह आलिमे कुल है। इल्म हमेशा जाहिलों में सफल होता है। ताक़त हमेशा कमजोरों की रक्षा में सफल होली है याद रखिये। और रोशनी हमेशा अंधेरे में सफल होती है, जहां अंधेरा है वहीं उसको ले जाइए वहां सफल हो जायेगी। आलिम अपनी जिन्दगी को वहां सफल कर सकते हैं कि जहां जाहिल हैं ताकि उनको इल्म मिल जाये। इल्म के मिलने से वे सफल हो जायेंगे। तो समझ लेना चाहिए कि भगवान् आलिमे कुल है लिहाजा अपने इल्म की बिना पर ही उसकी जिम्मेदारी हो गई है उसकी (रिस्पान्सिबिलिटी) Responsibility का आगाज अपने आलिमे कुल होने से ही शुरू हो गया है। एक पुरानी मसल चलीं आती है कि 'जो समझे वही तेल को जाए, मतलब—तेल लेने को जाए। चिराग जलाना है, समझ गया है? अंधेरा है!! जो जान गया है कि अंधेरा है तो उसी को जाना चाहिए तेल लेने के लिए। इसका अर्थ यह हुआ कि उसी का फर्ज है कि जरूरत को पूरी करे। इसलिए जब परमात्मा जानता है कि जीवात्मा इल्म में कमजोर है, महदूदुलअक्ल है, अल्पज्ञ है, कम जानने वाला है और मैं ज्यादा जानने वाला हूं तो इससे बेहतर और कौन सा मौका होगा परमात्मा के लिए, अपने अस्तित्व को सफल करे, अपने इल्म को बाकार करे, बेकार न रहने दे, useful (यूजफुल) बनाए, unuseful (अन्यूजफुल) न रहने दे, यों कहिये।

सोचने की बात है इस बिना पर भगवान् ने क्या किया ? कि हमेशा से जीवात्मा उसके साथ है अनादि काल से। तो अनादि काल से उसने क्या समझा ? कि मेरी Duty (ड्यूटी) है अब मेरा यह कर्त्तव्य है—Every opportunity to help is a duty (एव्री आपार्च्युनिटी टु हेल्प इज ए ड्यूट)—और ये Opportunity (आपार्च्युनिटी) और यह मौका परमात्मा को अनादि काल से मिला हुआ है। वह अनादि काल—There is no beginning at all (देयर इज नो बिगनिंग एट आल) जहां कोई शुरू नहीं है—तब से मिला हुआ है। ऐसा मौका भगवान् को मिला हुआ है। और जीवात्मा उसके पास है लिहाजा ईश्वर अपने अस्तित्व को सफल समझता है। क्योंकि जीवात्मा को ज्ञान प्रदान करता है, शक्ति प्रदान करता है।

मैंने आपके सामने मंत्र पढ़ा था 'आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते, जिस भगवान् ने हमें आत्म ज्ञान, अर्थात् अपने आपे का ज्ञान दिया है। हम अपने आप को भी नहीं जानते थे। करोड़ों आदमी अभी ऐसे हैं जो यह कहते हैं कि "हम तो Compound of Elements (कम्पाउण्ड आफ एलीमेंट्स) हैं। आग, पानी, हवा, जमीन वगैरा के मेल से हमारे अन्दर यह शऊर पैदा हो गया है, अथवा यह ज्ञान पैदा हो गया है। वे कहते हैं कि बस 'यावज्जीवेत् सुखं जीवेत्' जब तक जीवे सुख से जीवे, 'ऋणं कृत्वा घृतं पिवेत्,' कर्ज करके घी पीवे, 'भस्मिभूतस्य देहस्य पुनरागमनम् कुतः,' यह जो जल जायेगा शरीर, इस शरीर का फिर आना कैसे सम्भव हो सकता है ? खत्म हो जायेगा। बतलाइये ऐसे आदमी जो हैं उनके लिए क्या है ? उनके लिए तो कुछ नहीं है। लेकिन जो कहते हैं कि हकीकत में हम हमेशा रहने वाले हैं वे जानते हैं कि हमें दुबारा आना है। यह शरीर जो है वही तो नाशवान् है। बाकी जीवात्मा तो नित्य है। तो जिन्होंने जीवात्मा को नित्य नहीं समझा केवल यह समझा कि

हम Compound of elements हैं, इन भूतों का संघात हैं उनके लिए पाप पुण्य की कोई कीमत नहीं। सांख्य दर्शन रचयिता कपिल मुनि ने कहा है कि 'न भूत चैतन्यं-प्रत्येका दृष्टेः सांहत्येपि चसांहत्येहिच। न भूत चैतन्यं—आग, पानी, हवा, जमीन वगैरा इनमें चेतना नहीं है। There is no consciousness in these things (देअर इज नो कान्शियस्नेस् इन दीज थिंग्स)। वह यह कहते हैं कि इनके अन्दर शऊर नहीं है। इसलिए इनके Combination से, इनके मेल से ज्ञान कैसे उत्पन्न हो जायेगा ? कभी नहीं हो सकता।

मैं अब पूछ लूं जरा, बच्चे भी समझ जाएंगे और मास्टर साहबान भी समझ जायेंगे कि अगर किसी स्कूल के लिये (B.A.B.T.) बी०ए०बी०टी० मास्टर की जरूरत हो तो क्या दस (एंट्रेंस) पास को भेज देने से कमी पूरी हो जायेगी ? वह कहते हैं "तन्ख्वाह तो ज्यादा देनी पड़ेगी, कुर्सियां ज्यादा मंगवानी पड़ेंगी बैठने के लिए जगह कम हो जायेगी लड़कों के लिये बैठने की, जो दस आ जायेंगे। लेकिन पढ़ाई में कुछ न होगा, योग उसका वही होगा एन्ट्रेंस पास। चाहे हजार मास्टर हों एन्ट्रेंस पास, सौ हों या दस हों। योग में योग्यता वही आयेगी जो एक की है। तो हमें समझ लेना चाहिये कि किस प्रकार से हो सकता है कि भूत जिनमें ज्ञान नहीं है, जिनमें शऊर नहीं है उनके मिलाने से शऊर पैदा हो जायेगा यादि ज्ञान की उत्पत्ति हो जायेगी ? कैसे हो सकती है जब किसी में (ज्ञान) है ही नहीं ? यों जरा अच्छा समझ में आ जायेगा कि फर्ज कीजिये दस-दस रुपये दसवीं क्लास पास दस शख्सों को दे दिये। तो दस धाए सौ। रुपये का योग हो गया सौ, लेकिन योग्यता का योग रहा enrtance (एन्ट्रेंस) पास, दसवीं क्लास पास। इससे ज्यादा नहीं हुआ। तो मालूम हुआ कि यह ख्याल कि हम भूतों का संघात हैं और भूतों के संघात से हमारे अन्दर शऊर आ गया है that is nonsense वह बुद्धि के विरुद्ध बात है।

इसलिये भगवान् ने क्या कहा, "तुम नहीं जानते थे, मैंने तुम्हें पैदा करके, तुम्हारा आपेका ज्ञान तुम्हें दिया है"। तो 'य आत्मदा,' आत्मा के माने क्या हैं ? आत्मा का अर्थ Self (सेल्फ) और आत्मा के माने हैं कि जो दूसरे में व्यापक हो सके, अपने आपे को गैर में बढ़ा सके, दूसरे को अपने जैसा समझे अर्थात् यह समझे कि गैर की तकलीफ मेरी तकलीफ है, गैर का सुख मेरा सुख है। ऐसा अपने को समझा सके, बता सके। इसे आत्मा कहते हैं। 'अतति व्याप्नोतीति आत्मा' जो व्यापक हो सकें। माताएं हैं, अपनी जितनी सन्तान होगी उसी में व्यापक हो जायेंगी। दस सन्तान हैं तो दस में उतना ही प्रेम होगा, पांच हैं तो पांच में उतना ही प्रेम होगा। वह नहीं चाहती हैं कि उनमें से कोई कम हो जाये। ज्यादा हो जाएं तो कोई हर्ज नहीं। मैंने एक देवी से पूछ लिया जो अपनी संतान से बहुत परेशान हो रही थी, "क्या आप चाहती हैं कि कोई बच्चा इनमें से कम हो जाये ?" हंस के कहती हैं, "पंडित जी यह खयाल कभी नहीं आता कि कम हो जाये।" मैंने कहा, "कोई एक बढ़ जाये तो, तो भगवान् की मेहरबानी।" यह कह देती है लेकिन कभी नहीं चाहती है। क्यों नहीं चाहती ? क्योंकि अपने आपे को उन्होंने बढ़ा करके बच्चे के अन्दर डाल दिया है।

तो कहते हैं आत्मा का अर्थ 'अतति व्याप्नोतीति आत्मा' कि जो अपने आप को बढ़ा सके एक बात, और दूसरे Self (सेल्फ) अपने आपे को जाने कि "मैं क्या हूं" लोगों ने जाना नहीं कि जीवात्मा परमात्मा के पास हमेशा से है और हमेशा ही होने की वजह से परमात्मा जानता है कि ये मेरे पुत्रवत् हैं और मैं इनका पितावत् हूं और मैं मौजूद हूं। तो क्या मेरी मौजूदगी में बच्चा जाहिल रह जाये और जितनी Capability (कैपबिलिटी) इसमें तरक्की करने की है, Evolve होने

की है, विकसित होने की है अगर न हो मेरी कुरबत से और मेरी नजदीकी से तो मेरे लिये शर्म की बात होगी कि ईश्वर जैसा वजूद और उसका, जीवात्मा, जो पुत्रवत् है, उसके पास रहे, और परमात्मा को खबर हो कि यह कम इल्म है, महदूदुल इल्म है, और मैं सर्वज्ञ हूं, सब कुछ जानने वाला हूं और फिर भी खाली बैठा रहे और फिर अपने वजूद को सफल न करे और अपने ज्ञान को सफल करके उसको विद्वान् न बनाये यह कैसे हो सकता है ? खानदान में बाप के लिये भी बड़ा भारी उपालम्भ और उलाहना होता है और लोग शिकायत करते हैं कि आपका बेटा ? आप इतने बड़े विद्वान् हैं, और आपका बच्चा जाहिल रह गया, क्या वजह ? इसका कोई कारण तो होना चाहिये। इसलिये कहते हैं, परमात्मा चूंकि हमेशा से जानता है इस बात को कि मेरा अपना इल्म सफल जीवात्मा के होने से ही है। मैं तो केवल इतना कह सकता हूं कि जीवात्मा न हो और प्रकृति न हो तो ईश्वर भी नहीं होगा; बल्कि न होने के बराबर होगा। किसके लिये होगा फिर यह ? अगर प्रकृति नहीं तो अपनी कारीगरी काहे में दिखाये ? यह जगत् गूंनगूंन प्रकार का बनाया है, देखदेख कर आदमी आश्चर्य करते हैं। जरा चले जाएं मछलियों को ही देख लें बम्बई के अन्दर, उस जगह चले जाएं जहां बहुत सी चीजें परमात्मा की बनाई हुई उन्होंने इकट्ठा की हुई हैं कारीगरी को दिखाने के लिए। वहां आदमी जान लेगा कि इतनी कारीगरी भगवान् में होते हुये कैसे जाहिर करता वह ? इसलिये अपनी कारीगरी को जाहिर किया प्रकृति के जरिये से और अपने इल्म को जाहिर किया जीवात्मा के जरिये से। और वह जीवात्मा, जो थोड़ा सा इल्म ले सका है, जो थोड़ा सा ज्ञान भगवान् से ले सका है उससे कितने-२ करिश्मे कर रहा है ? यह मौजूद है (माइक्रोफोन) और साथ ही यह चीज (टेपरिकार्डर) मौजूद है। मैं बोल रहा हूं और बराबर इसके अन्दर रिकार्ड होता चला आ रहा

है। क्या चीज है? जरा समझ लीजिए। इन्सान, उसकी क्या हस्ती है। लेकिन ईश्वर का ज्ञान जिस मिकदार में इन्सान को प्राप्त हुआ है कि कितनी बड़ी तरक्की होती चली आ रही है। टेलीविजन अब आ गया है, जिससे आप व्याख्यान देने वाले को हजारों मील दूर होते हुए भी देख लेंगे और उसके व्याख्यान को भी सुन लेंगे। चाहे कितने ही फ़ासले पर क्यों न हो। क्या चीज है यह? यह है कि भगवान् से जो कुछ लिया है (मुस्तआर) उधार मांग कर जो इल्म लिया हुआ है उस इल्म का यह करिश्मा है, जिससे लिया है उसके अन्दर कितना होना चाहिए इसका अनुमान कीजिए। इस वास्ते इस बिना पर कि परमात्मा के पास हमेशा से जीवात्मा है और प्रकृति भी हमेशा से है, यह देखकर वह खाली कैसे बैठा रहे? खाली बैठने के लिये लोग क्या कहा करते हैं? 'An idle mind is a devil's workshop' (एन आइडल् माइन्ड इज ए डेविल्ज वर्कशाप) खाली बैठना शैतान की दुकान है। इसलिए हमेशा से खुदा खाली नहीं बैठा हुआ है। यह सवाल हम मुसलमानों से किया करते हैं "आप यह बताइये कि जब अकेला खुदा ही खुदा था और कोई नहीं था — वह ऐसा मानते हैं कि सिवाय ईश्वर के कोई नहीं था 'कानल्ला ह व लम् यकुल्लाहू शैआ' अर्थात् अल्लाह था और उसके साथ कोई नहीं था। जब साथ कोई नहीं था तो खुदा किसके लिये था? कोई तो कहते हैं 'उसने अपनी कुदरत को दिखाने के लिए दुनियां पैदा की" "किसको दिखाने के लिए?" जिसको दिखाना है वह तो पैदा ही नहीं हुआ था। जिसको दिखाना है वह तो पहिले होना चाहिए, नही है तो किसको दिखाता? कोई शय मौजूद होनी चाहिए जिसको दिखाना चाहते थे? जब कोई मौजूद नहीं था तो किसको दिखाने के लिए दुनिया बनाई? कुर्आन में आया है "माखलकतुल्जिन्न वल् इन्सा इल्लालि या बुदून्' हमने जिन्न व इन्सानों को अपनी इबादत के लिए बनाया, अपनी उपासना के लिए बनाया। बात अच्छी है लेकिन फिर

उसने पूछा कि "अपनी उपासना कराने से पहिले उसकी क्या हालत थी ?" क्या वह चाहता था कि मेरी उपासना हो, अगर वह यह चाहता था तो इतने वक्त तक वगैर उपासकों के कैसे रहा ? क्यों नहीं पैदा किये उसने अपने उपासक ? अपने आबिद जो उसकी इबादत करते ? क्यों खामोश रहा ? क्या वजह थी जिसकी वजह से बेकार रहा ? क्या चीज थी जिसकी वजह से वह असमर्थ रहा ? कोई न कोई कारण होना चाहिए ? क्या करता था वह उससे पहिले ? ऐसे बहुत से ऐतराज पैदा हो जाते हैं। लेकिन यहां वैदिक धर्म में नहीं होते। जो पूछेगा "परमात्मा दुनियां बनाने से पहिले क्या कर रहा था" ? उत्तर होगा "प्रलय कर रहा था"। दिन से पहिले क्या है ? बोले "रात" और रात से पहिले क्या है ? "दिन"। अब इस समय रात में क्या कर रहा है ईश्वर ? यह कर रहा है कि रात बढ़ रही है, बारह बजे तक रात बढ़ेगी और बारह बजे के बाद दिन शुरू हो जाएगा। क्या कोई ऐसा वक्त है इस रात और दिन में कि जहां कोई कम और ज्यादा न हो रहा हो ? रात के बारह बजे दिन बढ़ने लगेगा और दिन के बारह बजे फिर रात शुरू होने लगेगी और रात के बारह बजे तक बढ़ेगी। कोई वक्त भी घटने और बढ़ने से खाली नहीं है। इसी तरह भगवान् हमेशा से दुनियां को पैदा करता है और फना करता है, और चला आ रहा है। कोई वक्त उससे खाली नहीं है। उसके काम में कहीं कोई शुरू नहीं है क्योंकि वह खुद शुरू वाला नहीं है। वह Beginningless है और वह Endless है, न उसका आरंभ है और न उसका खातिमा है क्योंकि अनादि पदार्थ ऐसे ही हुआ करते हैं। तो इसलिये जब से वह है, जब से प्रकृति है, जब से जीवात्मा है तभी से बराबर जगत का सिलसिला चला आ रहा है। यह जो सवाल बीच में मैंने आपके सामने पेश किया था, उसके बारे में बहुत से आदमी पूछा करते हैं कि "सरदर्दी ईश्वर ने क्यों मोल ली है" ?

मैंने कहा "सरदर्दी ईश्वर के लिए नहीं है" इसके तीन वजूहात हैं। वे ये हैं—

१. ज्ञान की कमी २. पहुंच की कमी ३. शक्ति की कमी

कहीं देख लीजिए, एक आदमी कहता है, "महाराज पंडित जी मेहरबानी करके हमारी मदद कीजिये, आप विद्वान् हैं और हम विद्वान् नहीं हैं इसलिए आप जानते हैं, हम नहीं जानते हैं। इस सम्बन्ध में आप हमारा सहारा बन जाइए। एक बात।

दूसरे कहते हैं हमारी पहुंच नहीं है, वहां तक आपकी पहुंच है, आपकी मुलाकात है। हमारी पहुंच नहीं है पहुंच न होने की वजह से हमारा काम नहीं हो रहा है। इसलिए कहते हैं कि यह कमी दूसरी है।

तीसरी क्या है? इतनी शक्ति नहीं है, हममें ताकत नहीं है। तो बोले तीन बातों की वजह से आदमी मजबूर है। ताकत न होने की वजह से, इल्म न होने की वजह से, पहुंच न होने की वजह से। परमात्मा में तीनों कमियां नहीं हैं, तीनों पूर्णताएं हैं। वह हर जगह मौजूद है, कोई जगह उससे खाली नहीं है, हर जगह उसकी पहुंच है; कौन ऐसी जगह है जहां उसकी पहुंच नहीं है? प्रत्येक चीज के अन्दर व्यापक है, छोटी से छोटी चीज में व्यापक है, हर जगह पहुंच है। उसे यह परेशानी नहीं। सर्वशक्तिमान है वह। कोई चीज ऐसी नहीं है जो उसकी पहुंच में न हो। फिर सर्वज्ञ है, सब कुछ जानने वाला है, कोई चीज उसके इल्म से छिपी नहीं है। चूंकि यह तीनों बातें भगवान् में नहीं हैं, मनुष्य में हैं, इसलिए मनुष्य अपने खयाल से कह देता है कि "यह सरदर्दी क्यों मोल ली है" वर्ना कोई सरदर्दी नहीं है। उसके लिए निहायत खुशी की चीज है, क्योंकि उसका होना सफल हो रहा है। कोई उसे मुश्किल नहीं है। इस तरह पर जैसे हम सांस लेते हैं। आप काम करते हैं, सब कुछ करते हैं लेकिन यह बहुत

कम खयाल करते हैं कि हम सांस ले रहे हैं। जैसे सहज स्वभाव से हम सांस लेते हैं। शास्त्र में लिखा है कि "परमात्मा इसी तरह जगत की उत्पत्ति करता है।" उसके ऊपर कोई बोझ नहीं है, कोई भार नहीं है, कोई मुश्किल नहीं है, कोई सरदर्दी नहीं है। इस वास्ते जिन लोगों ने यह सवाल किया, गलती की। भगवान अपने वजूद को सफल कैसे करे अगर यह चीज न हो तो ? इसलिए कहते हैं अपने वजूद को सफल करता है और अपने इल्म के आधार पर ही कार्य कर रहा है। वही अहमद मसीह साहिब जिनका मैंने जिक्र किया था कि ईसाई धर्म के प्रचारक थे, गुजर गये बेचारे, बड़े लायक आदमी थे। उन्होंने सवाल किया एक दफा मुझसे कि "पंडित जी क्या दर्खास्त की थी जीवात्मा ने खुदा से, कि आप हमें दुनियां में भेजिये और हम सुकर्म करेंगे या कुकर्म करेंगे तो आप हमें फल दीजिए ? क्या उसने दर्खास्त की थी ?" मैंने पूछा पादरी साहिब से "दर्खास्त तो जब करे जब उसकी जबान हो ? जबान तो है ही नहीं, दर्खास्त कैसे करें। यह तो खुदा को खुद ही समझना चाहिए कि अगर खुदा की खाहिश है कि जीवात्मा दर्खास्त करे तो बिना उसकी दर्खास्त के पहले उसे जबान दे। वह दर्खास्त काहे से करे ? वह तो माजूर है, इसलिए बगैर उसकी दर्खास्त के पहिले उसे जबान देवे और जब जबान दे दे तब इन्तजार करे कि हां क्या कहता है वह ? 'मुझे बताइए, पादरी साहिब से मैंने कहा—यह बात ठीक है कि नहीं ?' मुस्कराने लगे, कहने लगे, हां बात तो ठीक है ?' इस वास्ते भगवान् ने अपने इल्म की बिना पर यह समझा कि अगर मेरी यह खाहिश है कि जीवात्मा अपनी तमाम बातों के मुताल्लिक मुझसे दर्खास्त करे तो उसको अपने इल्म की बिना पर पहिले इसे जबान देनी चाहिए। पूछने की जरूरत नहीं, उसकी हालत जो तकाजा कर रही है, उसी हिसाब से काम करे।

जीवात्मा की हालत शुरू से यह तकाजा कर रही है। क्या कर

रही है ? "हे भगवान् तुम ज्ञान स्वरूप हो मुझे ज्ञान प्रदान करो, हे परमात्मन् आप तमाम साधनों से युक्त हैं और तमाम चीजें आपके पास हैं, प्रकृति आपके पास है। आप मुझे साधन दीजिये जिससे कि मैं आगे उन साधनों से तरक्की कर सकूं। इसलिए मंत्र में कहा य आत्मदा बलदा, जो आत्मज्ञान का दाता है और बल प्रदाता है। बल आता है साधनों द्वारा। साधन न हों तो बल नहीं आता। इसलिए कहते हैं दोनों प्रकार के बल की प्रार्थना उस मन्त्र में की गई है।

तो ईश्वर ने जगत् क्यों उत्पन्न किया ? अब कहना चाहिए कि जीवात्मा के लाभ के लिए, जीवात्मा की तरक्की के लिए, अपने लिए नहीं। हां अपना होना सफल यूं हुआ वर्ना परमात्मा का होना सफल नहीं होता। मेरा व्याख्यान देना और वाकेफियत जो मेरी है वह सफल कब होती है ? जब होती है कि जो आदमी नहीं जानते हैं या कम जानते हैं वह जानने लगें। मेरा जानना सफल हो जाता है। सुनने वाले मुझसे सुनें, तो मेरा बोलना सफल हो जाता है। ये दुनियां निहायत माकूल अजजा से बनी हुई है। माकूल अजजा के क्या मायने हैं ? कि कितने जुज जरूरी हैं किसी अच्छे नतीजे को पैदा करने के लिए वह अनादि काल से चले आ रहे हैं।

(हीगल फिलासाफर) Hegal Philosopher ने कहा था कि "What so ever is, is according to reason and whatever is according to reason that is ?" (ह्वाटसो एवर इज, इज अक्कार्डिग टु रीजन एन्ड ह्वाटएवर इज अक्कार्डिग टू रीजन दैट इज) जो अकल के मुताबिक है वह है और जो है वह अक्ल के मुताबिक है। पहिले "है" को देख लीजिए अक्ल के मुताबिक है कि नहीं ? क्या जीवात्मा जगत् में मौजूद है, शरीर उनके दिये हुए हैं और वह जीवात्मा कुछ न कुछ रात दिन हासिल करता है। कोई धन हासिल करता है, कोई शोहरत हासिल करता है, कोई इल्म हासिल कर रहा

है। हासिल कर रहा है, रात दिन हासिल कर रहा है। और हासिल करने में लगा हुआ है। क्योंकि उनके पास कमी है। एक ओर तो सारे जीवात्माओं को रख लीजिए दूसरी ओर प्रकृति है। प्रकृति उन जीवात्माओं का साधन है, Instrument (इन्स्ट्रूमेंट) है, इनका वह औजार है। उन औजारों से जीवात्मा आगे काम करता है। एक शक्स बाइसिकल पर चला जा रहा है, बाइसिकल उसका औजार है। किससे बना है ? प्रकृति से matter (मैटर) से। तो इस वास्ते कहते हैं कि तीन चीजें है माद्दा (प्रकृति) जीवात्मा और परमात्मा। परमात्मा ने जीवात्मा के लिए प्रकृति से जगत् बनाया। फिर सुन लीजिए परमात्मा ने जीवात्मा के लिए प्रकृति से जगत् बनाया या उत्पन्न किया और कहा कि तुम इस साधन से तरक्की करो जहां तक तुममें योग्यता है। मैं तुम्हारा सहारा बनूंगा और बना हुआ हूं। अनादि काल से अनन्त काल तक बराबर मैं तुम्हारा सहारा रहूंगा और उस सहारे से तरक्की करते चले जाओ। तो क्या बात है ?

यह दुनिया जो है वह तीन चीजों से बनी हुई है और ये तीन चीजें वही हैं जैसा Hegal Philosopher ने कहा 'What so ever is, is according to reasan and what is according to reason that is' वह क्या है ? दुनियां में शुरू से ही अर्थात् शुरू कब से जब से दुनियां बनी है—क्या कोई वक्त ऐसा भी था जब दुनियां नहीं थी—नहीं यह मतलब नहीं है। कहने का मतलब यह है कि जबसे यह दुनियां का सिलसिला चला आ रहा है, आप देखेंगे कि ये तीन ही चीजें हैं ईश्वर, जीव और प्रकृति। और इन तीन चीजों को ही आप बराबर देखते चले जाइये। आप बाजार में चले जाइये, तो वहां क्या मिलेगा ? दूकानदार, खरीददार और चीज। लेकिन अगर वहां ऐसी तीन दुकानें खुली हों, कि दरवाजे तो खुले हों लेकिन उनमें से एक में चीज भी हों और दुकानदार भी हो लेकिन खरीदार न हो तो दुकानदार चीज किसे बेचेगा ? ऐसी अवस्था में दुकानदार

कहा करते हैं "जी मंदा हो रहा है।" दूसरी दुकान में चीज भी हैं खरीददार भी हैं लेकिन दुकानदार नहीं तो बेचेगा कौन ? तीसरी में दुकानदार भी है, खरीददार भी है, चीज नहीं है तो दुकानदार देगा क्या ? यह दुकानें खुली हुई भी बन्द के समान हैं क्योंकि एक में चीजें बेचने वाला नहीं, दूसरी में चीजें खरीदने वाला नहीं और तीसरी में चीजें नहीं हैं। इसलिए कहते हैं तीन में से किसी एक को निकाल दीजिए बाजार बन्द शुमार किया जाएगा। तो वह तीन बराबर चले आ रहे हैं उसी तरह पर। हमारे ऋषि मुनियों ने हमारे जीवन में इन चीजों को रखकर यह यकीन दिलाया है कि कहीं भूल मत जाना इन दुनियां की पूर्णता तीन पर है। परमात्मा, जीवात्मा और प्रकृति पर पूर्णता है। वहां जहां बाजार में नीलाम हो रहा है, चले जाइए। एक मुसलमान साहब, जो हमारे मजहब के नहीं हैं, चीजें नीलाम कर रहे हैं, क्या नीलाम हो रहा है ? पुरानी चीजें रखी हैं। किसी ने कह दिया दो रुपए अब आवाज लगा रहा है वह 'दो रुपया एक दो रुपया दो' बोल रहे हैं बार-बार। कोई आगे नहीं बढ़ता। फिर किसी ने कह दिया "तीन रुपये" तो मियां जी ने तीन रुपया एक, तीन रुपया दो की आवाज लगानी शुरू कर दी। बहुत देर जब हो गई तो उसने कहा, "साहिब अब जाती है तीन रुपये में" और कह दिया कि 'तीन रुपया तीन' और चीज तीन रुपये में बिकी मान ली गई। 'तीन रुपया तीन' कहते ही खरीदने वाला तीन रुपये देकर और चीज लेकर चला गया। कोई पूछता है उस नीलामकर्ता से कि 'तीन पर क्या बवाल है ? यह क्या वजह है कि यह तीन कह-कर ही आप अपनी बोली समाप्त कर देते हैं, ये तीन पर ही खतम क्यों करते हैं। ये चार, पांच, छः क्यों नहीं बोलते हैं ?" तो मियां जी कहने लगे "मैं क्या जबाब दूं साहब इसका ! यह तो पुराने जमाने से चली आ रही है किन्हीं बड़ों से पूछिए। जब रास्ते में आ रहे थे तो

क्या देखते हैं कि मास्टर साहब लड़कों को दौड़ा रहे हैं और कह रहे हैं देखो जब वन, टू और थ्री कहूं तो थ्री पर भागना। 'अरे आप मैथ-माटिक्स (गणित) के अध्यापक हैं। थ्री, फोर, फाइव, सिक्स, सेवन क्यों नहीं बोलते?" किसी ने कहा। उन्होंने कहा "अरे! ऐसे बोलेंगे तो काम नहीं होगा, लड़के कैसे दौड़ेंगे! देखिए 'वन, टू, थ्री कह कर लड़कों को दौड़ाया जा रहा है' और जो पास होकर आते हैं वे फर्स्ट डिवीजन, सेकिन्ड डिविजन और थर्ड डिविजन में आते हैं फोर्थ डिविजन नहीं है। रेल में बैठते हैं तो वहां भी फर्स्ट क्लास सेकिंड क्लास और थर्ड क्लास है। घर में जाइए तो देखते हैं कि स्त्री है, पति है और बच्चे हैं। तीन चीज वहां भी हैं। यहां देखिए तो मैं (व्याख्याता) व्याख्यान और आप (श्रोता)। इन तीनों में से कोई एक चीज निकाल दीजिए—मैं व्याख्यान देना बन्द कर दूं, चुपचाप बैठ जाऊ तो लोग कहेंगे कि 'इसे ऊपर क्यों बिठा रखा है और नीचे क्यों बैठे हैं, सब खामोश हैं आखिर बात क्या है?' आप चले जाइए मैं व्याख्यान देने लगूं तो लोग कहेंगे कि यह बेवकूफ है या पागल है? जो बहक रहा है, गर्मी तो इतनी है नहीं, यहां तो हवा चल रही है। शायद कोई खराबी हो गई है जो व्यर्थ बोल रहा है।

जरा विचारिए। कोई एक चीज आप इन तीन में से निकल दीजिए व्याख्याता, श्रोता और व्याख्या। यह तीन चीजों का नमूना किसी न किसी रूप में बराबर चला आ रहा है। कहने का मतलब यह है कि दुनियां ऐसे माकूल अजजा से बनी हुई है जिसका कोई खण्डन आज तक नहीं कर सका। जिस किसी ने भी इस सम्बन्ध में कोई शंका की मैंने यही उत्तर दिया कि तीन के वगैर कोई भी चीज पूरी होती हीं नहीं। मुसलमानों से पूछा कि खुदा दुनियां किसके लिये बनाता है? कोई होना चाहिए जिसके लिए खुदा ने यह दुनियां बनाई। ईसाइयों से भी यह बात पूछी। किन्तु वे भी कोई सन्तोष-जनक उत्तर न दे सके।

मेरे यहां तो इस प्रश्न का सीधा सा उत्तर है कि जीवात्मा हमेशा से परमात्मा के साथ है और ईश्वर, अनादिकाल से जबसे जीवात्मा उसके साथ है जानता है कि जीवात्मा महदूदुलअक्ल है। छोटे से छोटे जानवर के शरीर में भी जीवात्मा है। जीवात्मा अत्यन्त सूक्ष्म है। जैसा गीता में कहा है :—

नैनं छिन्दन्तिशस्त्राणि, नैनं दहति पावक:
न चैनं क्लेदयन्त्यापो, न शोषयति मारुत:।

जीवात्मा इतना सूक्ष्म है कि 'बालदग्रशतभागस्य शतधाकल्पितस्य च' बाल के अग्र भाग के दस हजारवें हिस्से के समान। शास्त्र ने जीवात्मा को इतना सूक्ष्म बताया है। इस कहने का तात्पर्य यह है कि जो जीवात्मा इतना छोटा है वह सर्वज्ञ कैसे हो सकता है? यह all knowledge तो नहीं हो सकता। परमात्मा जानता है कि जीवात्मा असंख्य है और मेरे अधीन है तो मेरी जिम्मेदारी है कि मैं उन्हें ज्ञान दूं, क्योंकि मैं all knowledge हूं मैं सर्वज्ञ हूं, सब कुछ जानता हूं। कितना अच्छा हो यदि मेरे ज्ञान का लाभ मैं भी उठाऊ और ये जीवात्मा भी उठाएं। यदि कोई व्यक्ति अपने ज्ञान से दूसरों को लाभ न पहुंचाए तो लोग उसे स्वार्थी कहते हैं। और कोई व्यक्ति अपने ज्ञान से अन्यों को भी लाभान्वित करे तो उसे लोग परोपकारी कहते हैं। तो परमेश्वर भी परोपकारी है। जीवात्मा के भले के लिए, जबसे वह है बराबर अपना ज्ञान देता चला आ रहा है। एक लम्हा के लिए भी उसने अपना काम बन्द नहीं किया है। जीवात्मा का वजूद, उसके अन्दर जो योग्यता उन्नति करने की है उसके विकसित होने से है। यह उन्नति ईश्वर के सम्पर्क से हो रही है। जैसे बच्चे के अन्दर जो काबलियत व योग्यता इल्म के हासिल करने की है वह उस्ताद की कुरबत से, अध्यापक के सान्निध्य से बढ़ती जा रही है। वह इल्म में

रात दिन ऊंचा होता चला जा रहा है। इसी प्रकार जीवात्मा ईश्वर के सान्निध्य से, जो उसका उस्ताद है, ऊंचा होता जाता है। उसका ज्ञान उत्तरोत्तर बढ़ता जाता है। ईश्वर अपने ज्ञान को इस प्रकार सफल कर रहा है। प्रकृति, प्रकृति यह कहती है—वास्तव में कहती तो नहीं है—किन्तु जबाने हाल से कहती है कौल से नहीं कि मैं भी सफल हो रही हूं क्योंकि परमात्मा अपनी कारीगरी में मेरी क्षमता को जाहिर करके बता रहा है कि प्रकृति से क्या-क्या लाभ उठाए जा सकते हैं। तो परमात्मा की कारीगरी प्रकृति को जाहिर कर रहा है और परमात्मा का इल्म जीवात्मा के गुण को जाहिर कर रहा है। जीवात्मा उस ज्ञान से अपना विकास कर रहा है। भगवान् ने जगत् क्यों बनाया ? ऊपर के वर्णन से स्पष्ट हो गया कि भगवान् जीवात्मा और प्रकृति का अस्तित्व सफल हो जाए इसलिए परमात्मा ने दुनियां बनाई।

जीवात्मा अपनी योग्यतानुसार मेरे ज्ञान के बल पर अपना विकास करे, अपनी उन्नति करे। और प्रकृति के अन्दर जितनी भी योग्यता है उनसे विभिन्न प्रकार की वस्तुएं बन सकती हैं वह मैं अपनी कारीगरी से जाहिर कर दूं। तीनों का वजूद सफल हो जायेगा इसीलिए भगवान् ने यह जगत् उत्पन्न किया है। औरों के यहां इस प्रश्न का "ईश्वर ने दुनियां क्यों पैदा की ?" कोई माकूल उत्तर नहीं है।

मुझे बल है, मैं ५३ साल से इस प्रचार कार्य को कर रहा हूं, शास्त्रार्थ मैंने किये हैं—मैं यह बात अभिमान से या अपनी योग्यता के आधार पर नहीं कहता हूं—मैं यह बात सच्चे सिद्धांत के आधार पर कहता हूं, हमारा हथियार अच्छा है और उसी के आधार पर हम कह सकते हूं, कि दुनियां के तीन से कम अनादि पदार्थ वालों का सिद्धांत अधूरा है, पूरा नहीं है। अकेले खाविन्द हो तो क्या परिवार बढ़ेगा ? कदादि नहीं। गृहस्थ को एक छोटा जगत समझ लीलिए। इसमें

ब्रह्म की जगह खाविन्द प्रकृति की जगह स्त्री है और जीवात्मा के स्थान पर बच्चे हैं। परिवार इन तीनों के होने से ही पूरा होता है। कोई आदमी अपने घर में अकेला रह रहा था। किसी ने पूछा "क्या बात है भाई शादी नहीं की ?" कहने लगा "कोशिश तो बहुत की लेकिन शादी होती ही नहीं।" और कहीं हो भी गई तो होने के बाद सन्तान न हुई। तो तब तक सन्तान न हो जाए, नामुकम्मल परिवार कहलाएगा। पूरा कब कहलाएगा ? जब बच्चे भी हों, देवी भी हो और स्वयं भी हो। इसी प्रकार इस ब्रह्माण्ड में परमात्मा है, जीवात्मा है और प्रकृति है। इन तीनों से ही जगत की पूर्णता है इसलिए Hegal philosopher की वह उक्ति कि 'Whatsoever is, is according to reason and what is according to reason that is संसार की सभी वस्तुओं के लिए उचित बैठती है। दुनियां में हर चीज अक्ल के मुताबिक है।

यह खयाल या प्रश्न कि 'ईश्वर ने दुनियां क्यों बनाई' यह इसलिए पैदा होता है कि इस दुनिया में आदमी जो भी काम करता है अपनी गरज को लेकर करता है। मनुष्य का यह स्वभाव बन गया है। कोई आदमी इलेक्शन में खड़ा होता है। क्या जनता की भलाई के लिए ? नहीं! बिल्कुल नहीं ! स्पष्ट कथन है। उसका अपना स्वार्थ होता है जिसे वह दृष्टि में रखकर चुनाव लड़ता है। चाहे वह इसके द्वारा प्रतिष्ठा चाहता हो चाहे शोहरत चाहता हो या धन चाहता हो। तो ज्ञात हो गया कि मनुष्य सारे कार्य स्वार्थवश करता है, अपनी गरज को लेकर करता है, उसी को मुख्य या मुकद्दस रखता है। तो लोगों ने इसी आधार पर ईश्वर के बारे में भी सोचा और ख्याल किया कि ईश्वर की भी दुनियां की उत्पत्ति में कोई गरज है। मैं कहता हूं कि दुनियां के बनाने में खुदा की कोई गरज नहीं है और यदि कोई Impetus है तो यही है कि अगर मैंने अपने इल्म को,

अपनी कारीगरी को दुनियां में न जाहिर किया तो मैं निकम्मा रहूंगा, useless रहूंगा। यही कारण है कि जिसकी वजह से ईश्वर जगह को अनन्तकाल से उत्पन्न करता चला आ रहा है। यह सिल-सिला अटूट है।

जीवात्मा मौजूद है। परमात्मा ने जगत बना दिया। जीवात्मा को शरीर प्रदान करके ईश्वर कहता है कि "मैं तुझे मनुष्य का शरीर प्रदान करता हूं जिससे तू मननशीलता से काम करे। जैसे मैंने मनन-शीलता से जगत को बनाया है तू भी मननशीलता से काम कर। तू भी मननशीलता से अपना छोटा जगत बना सकता है। तेरे को मैं ज्ञान प्रदान करता हूं (सृष्टि के आदि में भगवान ने वेदों का ज्ञान दिया) तू इसके द्वारा उन्नति कर"। इस ज्ञान के आधार पर जीवात्मा ने उन्नति और अवनति करनी आरम्भ की। दोनों काम कर सकता है न। कहना मान भी सकता है और न भी माने, फर्माबिरदारी करे, और न भी करे दोनों बातें हैं। Capricious will है न जीवात्मा की—जीवात्मा स्वतन्त्र है, जीवात्मा चाहे अच्छा करे चाहे बुरा करे, उसकी मर्जी है और इसी के लिए सजा और जजा है बाकी और योनियों वाले जीवात्माओं के लिए नहीं है। क्योंकि बाकी तो जेलखाने के कैदी हैं, वह तो जहां हैं तहां हैं। वह तो उसी महदूद दायरे में रहते हैं आगे नहीं निकल सकते। इन्सान के लिए ऐसा नहीं है वह स्वतन्त्र हैं। तो वह अपनी इन्द्रियों को अपने मन को और अपनी बुद्धि को जिस तरह चाहे वैसे प्रयोग में लावे। चाहे अच्छी तरह काम में लाए, चाहे बुरी तरह काम में लाए। दुनियां में पाप और पुण्य और कुछ नहीं है केवल अपनी ताकत का गलत वेजा इस्तेमाल पाप है और बजा या उचित इस्तेमाल पुण्य है अत: अपनी शक्ति का उचित उपयोग करें या अनुचित करें। भगवान् ने सब कुछ जता दिया और जताने के बाद शरीर दे दिया और कह दिया कि अब तो उचित अनुचित का विचार करके अपना कार्य करता चला

जा । यदि वह अपनी शक्तियों का उचित उपयोग करता है तो दुबारा भी मनुष्य योनि प्राप्त कर लेगा। किन्तु शक्ति का अनुचित प्रयोग करने पर ईश्वर उसको मनुष्य योनि योग्य नहीं समझता और उसे नीची योनि में भेज देता है क्योंकि उसने दूसरों को नुकसान पहुंचाया है, अपनी स्वतन्त्रता का गलत इस्तेमाल किया। कैसे ? इस मिसाल से आप समझ जायेंगे। एक बच्चा स्कूल में जाता है। लेकिन बच्चा बड़ा उद्दण्ड है। किसी की कापी फाड़ देता हैं, किसी की किताब फाड़ देता है, किसी की स्याही उडेल देता है, किसी को मारने लगता है, किसी के कान खींच लेता है, खूब शरारत करता है, मास्टर उसके संरक्षक से शिकायत करते हैं कि 'तुम्हारा बच्चा ठीक नहीं है, उसको मना कीजिये। अगर आगे यह अच्छी तरह बरतेगा तो उसको स्कूल में रखेंगे वर्ना निकाल देंगे। लेकिन पुरानी आदत है, जल्दी छुटती नहीं है। इसलिए क्या हुआ कि बच्चा जब दुबारा स्कूल में गया तो उसने फिर वही शरारत करनी शुरू की। मास्टर ने उसके पिता को लिख दिया कि आपका बच्चा स्कूल में नहीं आ सकेगा। इसलिए आप इसे स्कूल न भेजिये, हमने इसे स्कूल से निकाल दिया है, वह अन्य बच्चों पर बुरा प्रभाव डालता है। इस पर बाप बहुत नाराज हुआ लड़के पर और कहने लगा कि "मैंने तुझे मना किया था कि तू आगे ऐसा काम न करना और तुझे आजमाइश के लिए स्कूल में भेजा था। लेकिन आजमाइश में भी तू बाज नहीं आया और शरारतें कीं। अब तुम यहीं रहो। तुम्हें हम बाहर नहीं निकलने देंगे। पेशाब और पाखाने के लिए भी पूछ के यहीं जाओ। बाहर बिल्कुल नहीं जाना है। खाने व पानी पीने के लिए भी पूछकर जाना।" जैसे अपने बच्चे को बाप ने कैद कर दिया। इसी प्रकार परमात्मा, उन जीवात्माओं को जो उसकी आज्ञा का पालन नहीं करते हैं, उसकी हिदायतों के बखिलाफ चलते हैं उन्हें दूसरी नीची योनियों में गधा, कुत्ता आदि में भेज देता है। यहां ये महदूद दायरे में रहते हैं उससे आगे नहीं जा सकते। इस प्रकार उन्हें कैद कर देता है।

इन्सानी जिस्म में तो जीवात्मा दोनों जगह यक सां है। गवर्नमेंट के कैदखाने में भी इन्सानी जिस्म में है और स्वतन्त्र स्थान में भी इन्सानी जिस्म में। मैं व्याख्यान दे रहा हूं किन्तु कोई ऐसा काम करूं जिससे मुझे जेलखाने में जाना पड़े तो इसी जिस्म के साथ चला जाऊंगा लेकिन भगवान् का ऐसा कायदा नहीं है। भगवान जब कैद करता है तो जिस्म बदल देता है और अवस्था भी बदल देता है। अब वहां जाकर वह आगे नहीं बढ़ सकेगा। गधे को आज तक यह मौका नहीं हुआ कि वह वेद पढ़े चाहे उस पर हजार वेद लाद दीजिए कहीं शास्त्रार्थ में जाना हो और उस पर वेद लादकर ले जाए जायें तो वह पंडित नहीं कहलायेगा। उनको तो वह बोझ ही है। तो भगवान् ने जीवात्मा से वह चीज (उसकी स्वतन्त्रता) छीन ली जिसके वह लायक नहीं है, योग्य नहीं है, या जिसका वह अनुचित प्रयोग करता है तो लड़के का पिता द्वारा कैद किया जाना ईश्वर की व्यवस्था की नकल है। यह कोई नई चीज नहीं है। हम कोई नई चीज पैदा नहीं कर सकते। Invention कहना बिल्कुल गलत है। तमाम नियम मौजूद हैं। इन नियमों के पहिचान लेने की और तदनुकूल कोई कार्य करने को ही तो Invention कहते हैं। परमात्मा की साइन्स के नियम हर जगह pervade करते हैं कोई जगह उनसे खाली नहीं है। हमने केवल उन नियमों को जानकर ही किसी का आविष्कार किया है जिसे Invention कहते हैं। इसलिये दुनियां में हम जो कुछ भी कर रहे हैं वह भगवान् के नियमों को जानकर उसकी नकल कर रहे हैं। भगवान् के तरीके से कोई नई चीज हम न करते हैं और न कर सकते हैं। मैंने जो मिसाल दी थी कि उस्ताद इम्तहान में अपने बेटे को भी नहीं बताता है जो गलत जवाब दे रहा है। उसने उसे स्वयं पढ़ाया है। लोगों ने यही मुझसे पूछा था कि "भगवान् हमें बुरे काम से रोकता क्यों नहीं ?" इसलिए नहीं रोकता कि वह इम्तहान का

वक्त है। उसे कैसे रोके ? वह तो आपकी योग्यता की पूरी जांच करेगा। दूसरे किसी की नकल भी न कर सकोगे। अब पूरे परीक्षण के पश्चात् सजा दी गई है अब उस दोषी जीवात्मा को उसने वहां कैद कर दिया है वह अब एक सीमित दायरे में रहे। जो स्वतन्त्र जीवात्माए हैं वे स्वतन्त्रता पूर्वक अपना कार्य कर रही हैं। परमात्मा ने कहा "शादी करना चाहते हो तो शादी कर लो। गृहस्थ आश्रम का पालन करो। समाज की व्यवस्था हम करेंगे। तीन फैक्ट्री होंगी। जिनमें ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य तैयार किये जायेंगे। जिन्होंने ब्राह्मण के गुण हासिल किये हैं वे ब्राह्मण बनेंगे, जिन्होंने क्षत्रिय के वे क्षत्रिय और जिन्होंने वैश्य की योग्यता हासिल की हैं वे वैश्य बनेंगे। ये तीन फैक्ट्री होंगी जिनके अन्दर ये तीन प्रकार के मनुष्य तैयार होंगे। यह हो सकता है कि उन्नति करके कोई मनुष्य वैश्य से क्षत्रिय या क्षत्रिय से ब्राह्मण बन जाए। यह भी हो सकता है कि अवनति हो जाए और ब्राह्मण से क्षत्रिय या क्षत्रिय से वैश्य बन जाए। यह हमारे व्यवहार से भी होता है। मास्टर बच्चों को पढ़ाता है। उन पढ़ाए हुए बच्चों में कुछ ऐसे होते हैं जो नीची कक्षा के योग्य हों जिन्हें नीची कक्षा में छोड़ना पड़े क्योंकि वे उस कक्षा के योग्य नहीं हैं। मनुष्य की व्यवस्था में भी यह होता ही है, कोई नई बात नहीं है। भगवान् की भी यही व्यवस्था है। ब्राह्मण अधिक से अधिक कोशिश यह करेगा कि उसका बेटा ब्राह्मण बने क्षत्रिय चाहेगा कि क्षत्रिय बने और वैश्य भी वैश्य ही बनाना चाहेगा। किन्तु अगर किसी में अधिक योग्यता हे तो वह ऊचा जा सकेगा। वह रोकने की चीज़ तो नहीं है।

प्रत्येक खानदान में एक दूसरी चीज भी हो रही है तीन पैमाने वैदिक सभ्यता के बन रहे हैं। मां, बहन और बेटी के तीन पैमाने जो बड़े सच्चे व सही पैमाने हैं, आर्य परिवारों के तैयार हो रहे हैं। क्या वहां उनकी पवित्रता में कोई शंका हो सकती है ? अगर भाई अपनी

बहिन से बातें कर रहा है, क्या कोई शंका करता है ? बेटा अपनी मां से और बाप अपनी बेटी से जब बातें करता है तो क्या कोई शंका करता है ? क्या किसी को कोई शक होता है ? बिल्कुल नहीं होता ? क्यों नहीं होता ? वे बिल्कुल पवित्र स्थान हैं, वहां रिश्ते की इतनी पवित्रता है कि किसी को शक की गुंजाइश नहीं है। मां, बहिन और बेटी के सच्चे पैमाने जो व्यवहार में आने हैं उनका निर्माण हो रहा है परिवारों में ।

परिवारों में इस सच्चे पैमाने का निर्माण ईश्वर की ओर से क्यों स्थापित किया गया ? इसलिए कि तुमको अपने घर से बाहर जाकर Society (सोसायटी) Move (मूव) करना है। वहां तुम्हें तुमसे गैर औरतें मिलेंगी । जो तुम्हारे खानदान की न होंगी, न तुम्हारी रिश्तेदार होंगी, न तुम्हारी बिरादरी की होंगी और तुम्हें उनके बीच में काम करना पड़ेगा । वे तुमसे छोटी होंगी, तुम्हारी बराबर की होंगी और तुमसे बड़ी होंगी । इन तीनों के साथ कैसे व्यवहार करना है यह परिवारों में बताया गया है । ये पैमाने ऐसे हैं जिनमें कोई Impurity (इम्प्योरिटी) अपवित्रता नहीं है । ये पैमाने अपने खान ए दिल में रखकर के जाओ और बाहर जाकर यदि अपने से बड़ी स्त्री हो तो उसे माता के तुल्य समझो और यदि छोटी हो तो अपनी बेटी के तुल्य समझो । उन्हीं तीन पैमाने से उन्हें नाप लो । अपने हृदय को पवित्र रखो और उनके कार्यों में सहायक होकर उनके मार्गों को सुरक्षित बनाओ, उन्हें प्रशस्त करो । आज प्रत्येक पिता अपनी पुत्री को कहीं अकेला भेजने में शंका करता है क्योंकि पैमाने गलत होते जा रहे हैं । इन पैमानों को बिगाड़ने में सिनेमा मुख्य कारण है । यह मैंने ही अनुभव नहीं किया है जो सिनेमा प्रवन्धक हैं और विचारशील पुरुष है वे भी यही कहते हैं । मैं एक बार हापुड़ जा रहा था । उसी डिब्बे में एक और साहब भी थे जो सिनेमा का सामान लेकर देहरादून जा

रहे थे। वे मेरे वाकिफ थे मुझे कहीं उन्होंने देखा था। मुझे देखने पर उन्होंने नमस्ते की। मैंने पूछा "कहिए क्या ले जा रहे हैं ?" कहने लगे पंडित जी क्या बतायें आपसे कहने में शर्म आती है। वे कुछ चल चित्रों की प्रशंसा कर रहे थे और सिनेमा के बारे में ही बातें हो रही थीं। मैंने उनसे बीच में ही पूछा कि बताइये सिनेमा द्वारा आपने समाज की क्या सेवा की है ?—क्या अच्छा जवाब दिया है उन्होंने—कहने लगे "पंडित जी आपसे क्या छिपाना है, बिल्कुल सच कहूंगा। हमने आज भाइयों को भी अपने खानदान में ऐतबार के लायक नहीं रखा है। सिनेमा का इतना जोरदार प्रचार किया है हम लोगों ने कि मनोवृत्तियां लोगों की बिल्कुल बिगाड़ दी हैं। ये अत्यन्त दूषित हो चुकी हैं।' मैं चुप हो गया क्योंकि उन्होंने ठीक बात कह दी। विशेष कहने की कोई आवश्यकता नहीं रही है यह स्थिति है। भाई की वृत्ति भी इतनी बिगड़ चुकी है। पैमाने की वह पवित्रता, जिसका मैंने जिक्र किया था, वह समाप्त हो गई। इस प्रकार की अनेक खराबियां आज आप अपने समाज में देख सकते हैं भगवान् ने इन्हीं खराबियां को रोकने के लिये खानदानों में तीन पैमाने तैयार किये थे। बहन भी होगी, भाई व बाप भी होंगे और धर्म पत्नी भी होगी। और सब साथ रहते हैं। इनकी पवित्रता के बारे में किसी को कोई संदेह नहीं होता।

एक बार बाजार में भाई और बहिन बातें कर रहे थे। उम्र का थोड़ा ही फर्क था। अन्तर होगा कोई दो या ढाई साल का। किसी ने कहा कितने बेहूदे हैं, बातें बाजार में कर रहे हैं खड़े होकर न जाने कौन हैं कौन नहीं !" उनको वहां जानने वाला एक आदमी था। उसने कहा, "तुम्हें मालूम नहीं ! ये दोनों भाई बहिन हैं"। अपने स्कूल से दोनों पढ़कर आये हैं और घर को जा रहे हैं। उसने कहा, 'अच्छा यह बात है तो कोई हर्ज की बात नहीं है।' तबियत से ख्याल

हट गया। भाई बहन कहने का मतलब यह है कि वहां अपवित्रता है ही नहीं। वह तो परिवार का अभिन्न अंग है। जो कि आनन्दधाम है। वह ऐसा Retreat (रिट्रीट), आश्रम है जहां यदि आदमी के जजबात भड़के हुए भी हैं तो घर में आकर शांत हो जायेंगे या उनको शान्त करना पड़ेगा। इसलिए जीवन में शान्ति बनाए रखने के लिए हमें उन पैमाने को सच्चा रहने देना चाहिए। जिससे कि हम जब समाज में कार्य करने निकलें तो हमारे कार्य से या व्यवहार से समाज की शान्ति भग न हो जाए। अमन कायम रहे। तब यह दुनियां स्वर्ग हो जाएगी।

'य आत्मदा बलदा' इस मन्त्र के अनुसार जिसने अपने को समझ लिया है वह गलत काम कर ही नहीं सकता। जोशी अस्पताल में जहां मेरा आपरेशन हुआ था तो डाक्टर ने मुझे वहां घूमने के लिए कहा। मैं निकट के अजमल खां पार्क में घूमने जाया करता था। वहां मैं कुछ देर बैठता था। लोग प्रश्न पूछा करते थे। एक दिन, एक सज्जन पुरुष ने मुझसे पूछा कि "क्या मांस खाने वाला महात्मा हो सकता है ?" मैंने कहा, "बिल्कुल भी नहीं।" क्योंकि उसने अपनी आत्मा की बेइज्जती की है, अपनी आत्मा क्या कभी चाहती है कि कोई उसे मार दे ? प्रत्येक आदमी अपनी रक्षा करना चाहता है। एक बार किसी नदी के किनारे—याद न रहा गंगा थी या यमुना—किसी ने यह शोर मचा दिया कि 'नदी में पानी बढ़ रहा है'—वहां हजारों आदमी स्नानार्थ गए थे—वहां इतना सुनकर लोगों में कैसी भगदड़ मची। लोग अपनी-२ जान बचाने के लिए बेतहाश भागे। कुछ पता ही नहीं चला कौन कहां चला गया। कोई दब गया, कोई मर गया। किसी का बच्चा छुट गया, किसी का सामान छूट गया। एक भयकर स्थिति व दृश्य उपस्थित हो गया जरा सी देर में। ये सब क्या था आत्म रक्षा का प्रयत्न था। "मया जार मोरे कि दाना

कशस्त कि जांदारदो जानशीरी तर अस्त" इसका अर्थ यह है चींटी को न सता कि जान रखती है और जान सबसे प्यारी चीज है। जान तो सभी को प्यारी है तो जिसने यह समझ लिया कि मेरी जान मुझे प्यारी है तो अन्य को भी वैसी ही होगी। फिर क्या वह दूसरी जान को मारेगा? अगर वह दूसरी जान को मारता है तो स्पष्ट है कि वह अपनी आत्मा की बेइज्जती करता है। इस प्रकार का आदमी महात्मा कैसे हो सकता है? वह साधारण आत्माओं की कोटि में भी नहीं आता, वह पतितात्मा है। क्योंकि वह ऐसा काम करता है जो उसे नहीं करना चाहिए।

किसी को दण्ड देना और चीज है। दण्ड सुधार के लिए है। लेकिन जो लोग अपनी जबान के जायके के लिए, दूसरों के गोश्त से अपने को मोटा बनाने के लिए जीवों की हत्या कर देते हैं वे पापी हैं। ऐसा उनको नहीं करना चाहिए।

'य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः' यस्य प्रशिषं विश्वे देवा उपासते—जिसके शासन को, जिसकी शिक्षा को सभी विद्वान् लोग स्वीकार करते हैं। कोई ऐसा विद्वान् नहीं है जो उसके नियमों को स्वीकार न करता हो चाहे वह खुदा को मानता हो या न मानता हो। वह यह कह सकता है कि मैं ईश्वर को नहीं मानता किन्तु उसके शासन से इन्कार नहीं कर सकता। जो आदमी शासन को मानता है शासक को नहीं मानता, इन्तजाम को मानता है, मुन्तजिम को नहीं मानता, उसमें अभी आधी बेवकूफी मौजूद है। क्योंकि दुनियां में क्या कोई इन्तजाम बगैर मुन्तजिम के हो सकता है? क्या कोई शासन कभी बगैर प्रशासक के हो सकता है? एक सज्जन मुझसे कहने लगे कि 'हमारे जो (Prime minister) साहब हैं वह गांधी जी की सोहबत में रहकर भी ईश्वर को नहीं मानते हैं। मैंने पूछा "इन्तजाम को मानते है कि नहीं?" कहने लगे कि 'इन्तजाम को मानते हैं।' तो मैंने कहा 'अभी उसका ज्ञान पूरा नहीं

है, 'इस सम्बन्ध में (ईश्वर के सम्बन्ध में) वे पूरे वाकिफ नहीं कहे जा सकते। इसलिए आधे नावाकिफ कहे जायेंगे। चाहे कितने ही बड़े क्यों न हों। इस बारे में हमें स्पष्ट कहना पड़ेगा जो इन्तजाम को माने और मुन्तजिम को न माने तो वह शख्स पूरे ज्ञान की बात नहीं करता। सूर्य का बराबर बाकायदा निकलना, चांद का धीरे-२ घटना बढ़ना सब किसी नियामक, शासक या मुन्तजिम को सिद्ध करते हैं, इसी के आधार पर अपने कार्यक्रम नियत करते हैं, तारीखें मुकर्रर करते हैं। नहीं तो कैसे वर्ष का अनुमान लगाया जाए ये कार्यक्रम किस आधार और विश्वास पर आधारित हैं ? यह सब बातें प्रभु के अटल नियम के आधार पर कह रहे हैं। उसी के नियम से निश्चित समय पर साल पूरा हो जाता है। तो जो लोग नियम को मानते हैं नियामक को नहीं मानते, इन्तजाम को मानते हैं मुन्तजिम को नहीं मानते, प्रबन्ध को मानते हैं प्रबन्धक को नहीं मानते वे आधे बेवकूफ हैं। यह अज्ञानता, नावाकफियत लोगों से धीरे-धीरे दूर होगी। तो इस मन्त्र में प्रभु के शासन के बारे में भी कहा गया है।

एक साहब ने मुझसे पूछा कि "जब जीवात्मा उल्टे काम करता है, जैसे कहा जाता है वैसे नहीं करता तो भगवान् के लिए आवश्यक है कि वह उसे शिक्षा दे।" तो उस शिक्षा देने का विषय बिल्कुल अलग है उसे तनासुख कहते हैं। तनासुख के शाब्दिक अर्थ जायल करना है, पुराना शरीर जायल करके नया शरीर देना है। मुसलमान तमासुख मानते हैं तनासुख नहीं मानते। तमासुख अर्थात् मस्ख कर देना अंग्रेजी में उसके लिए Transform (ट्रांस्फार्म) शब्द आता है। तो वे Transformation तो मानते हैं किन्तु Transmigration (ट्रांसमिगरेशन) नहीं मानते। मैंने उनसे एक बार यह पूछा कि 'क्या जिन लोगों ने खुदा का हुक्म नहीं माना था—कि हफ्ते के रोज मछली का शिकार न करना' कुछ लोगों के जबान के स्वाद के

लालच में किसी न किसी प्रकार शिकार किया—तो खुदा नाराज हो गए थे और उसने उनको बन्दर व सूअर बना दिया कुर्आन में लिखा हुआ है :—

मल्लअनहुल्लाहु व गजिबा अलैहि व जअल मिन्हुमुल् किरदत वल् खना जीर

अर्थ—जिन पर खुदा ने लानत की और उन पर अपना गजब नाजिल किया और बाज को बन्दर और सूअर बना दिया। सूरत पांचवीं। रुकू ९। आयत ६०।

हनफी साहबान तो यही मानते हैं कि जैसी उनकी नौ है, जाति है Species (स्पीसीज) होती है उसी के मुआफिक खुदा ने उनको बना दिया। लेकिन अब जो अहमदी लोग हैं वे ऐसा नहीं मानते—तो उन्होंने जवाब दिया कि "पंडित जी नहीं, उनकी सूरतें नहीं बदलीं, रहे तो वे आदमी ही किन्तु उनकी आदतें बन्दर और सूअर जैसी हो गई। मैंने कहा 'यह तो और भी बुरा हुआ। आदमी रहते हुए उनकी आदतें बन्दर और सूअर जैसी हो गई' जरा गौर कीजिए कि अगर सूअर की आदत वाला आदमी मेरे मकान की ओर आ रहा हो तो वह मेरे पास आएगा या कहीं और तरफ जाएगा। सूअर की आदत तो गन्दगी खाने की है। तो वह तो गन्दगी की तरफ जाएगा। यह तो अच्छा नहीं मालूम देगा कि शक्ल आदमी जैसी और आदत सूअर जैसी।' यह सुनकर वे शर्माने लगे। आगे मैंने कहा कि 'यदि आदमी की शक्ल होगी और आदत बन्दर की होगी तो बिना कारण दरख्त पर चढ़ जाएगा, कभी कोई चीज तोड़ेगा, कभी कोई चीज गिरा देगा। दूसरों का नुकसान करेगा।' तो आपका यह सुधार, सुधार नहीं होगा। बल्कि बिगाड़ होगा। पुरानी बात ही ठीक है कि खुदा ने उनको

बन्दर और सूअर बना दिया। कुर्आन के इस लेख से तो हमारी बात सही हो जाती है कि जब इन्सान, इन्सान के योग्य नहीं रहता है तो परमात्मा उसे नीची योनि में भेज देता है।

हमारे एक मित्र हैं वे एक भजनीक के बारे में कुछ बातें कर रहे थे। कहते थे कि वे बड़े मजाकिया आदमी हैं। जब मजाक उड़ाते हैं तो ईश्वर का भी मजाक उड़ा देते हैं। कहा करते हैं कि "ईश्वर ने यह क्या किया कि किसी को अमीर बना दिया और किसी को गरीब बना दिया, किसी को लंगड़ा बनाया और किसी को लूला, किसी को एक आंख दी और किसी की दोनों फोड़ दीं ? और फिर ऐसी दुनियां बनाकर क्या मजे ले रहा है, कैसा खुश हो रहा है'। वैदिक सिद्धांत से ईश्वर के ऊपर यह आक्षेप आ ही नहीं सकता। उसने जो कुछ भी किया है न्याय पूर्वक किया है, उसकी तुला सच्ची है, जिसने जैसा किया है उसी के अनुसार उसे फल मिल रहा है। 'अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्' जो कर्म किये हैं उसका फल अवश्यमेव भोगना पड़ेगा। जो लोग शरीर का दुःख भोग रहे हैं निश्चित रूप से उन्होंने अपने शरीर से दूसरों को कष्ट पहुंचाया है। शरीर से तीन पाप चोरी, व्यभिचार और हिंसा किये जा सकते हैं उन पापों के करने के परिणाम स्वरूप मनुष्य को शारीरिक कष्ट होते हैं। दिल्ली में एक मुसलमान फकीर थे जिनकी दोनों टांगें नहीं थीं। पैदाइशी नहीं थीं उनके लिये चलना बड़ा मुश्किल था क्योंकि वे डगें लम्बी नहीं भर सकते थे क्योंकि उनकी टांगें बहुत छोटी थीं। जब उन्हें सड़क पार करनी होती थी तो वे किसी की मदद से सड़क पार किया करते थे। 'अल्लाह के नाम पर कुछ दिलवाइए।' मैंने कहा---उस अल्लाह के नाम पर जिसने बिना वजह आपकी टांगें ले लीं और दूसरों को दे दीं। देखिए कितने और लोग हैं उन सबकी टांगें हैं। वे सभी

अच्छे ढंग से चलते फिरते हैं और आपको चलने फिरने में इतना तकलीफ उठानी पड़ती है। अभी आप इतने मजबूर थे कि दूसरे आदमी की मदद से सड़क पार कर सके। ऐसे खुदा के नाम पर हम तो आपको कुछ नहीं देना चाहते। 'कहिये आपका मजहब क्या कहता है ?" मजहब तो कहता है 'कि खुदा कादिर है जो चाहे सो करे। मैंने कहा 'कुदरत का इतना वेजा इस्तेमाल कि आपकी बिना वजह टांगें ले लीं और दूसरों को दे दीं'। मैंने आगे कहा It is excellent to have a giant's strength but it is tyranous to use it like a giant (इट इज इक्सीलेंट टु हैव ए जाइन्ट्स स्ट्रैन्थ, बट इट इज टायरेनस टु यूज इट लाइक ए जाइन्ट) किसी में दानव जैसा शारीरिक बल हो तो वह अच्छी बात है किन्तु उसको दानव की तरह प्रयोग में लाए यह जालिमाना बात है। खुदा अगर कादिर मुतलक है तो इसलिये कि आपकी या किसी की भी टांगें बिना मतलब छीन ले ? अच्छा अब यह बताइये कि आपका दिल क्या कहता है ?' मियां जी ने जवाब दिया कि हां दिल तो कहता है कि कोई न कोई कारण जरूर है जो मुझे टांगें न मिलीं और दूसरों को मिल गईं। मैंने जरूर कोई गलती की होगी। तो मैंने कहा कि, 'देखिये धर्म तो कहता है कि खुदा कादिर मुतलक है जो चाहे सो करे और दिल जो खुदा का बनाया हुआ है वह यह कहता है कि नहीं कोई न कोई वजह जरूर होनी चाहिए। यह साबित हुआ कि मजहब खुदा का बनाया हुआ नहीं है और दिल खुदा का बनाया हुआ है। क्योंकि आपने सच्ची बात कही है और आप समझ गए हैं तथा आपने मजहब की बात की गलती भी पहिचान ली है इसलिए मैं आपको इकन्नी देता हूं।"

मैं यही अर्ज करना चाहता हूं कि हमें अच्छी प्रकार से समझ लेना चाहिए कि भगवान जो कुछ करता है वह हमारे कर्मों का ही फल

होता है और मनुष्य जाति के भले के लिए होता है। कई बार ना समझी और अदूरदर्शिता के कारण बच्चे अपने मां-बाप के कार्यों से रुष्ट हो जाते हैं और उनकी आज्ञाओं के पालन में चूं चरा करते हैं।

एक बाबू गौरी शंकर जी थे। दिल्ली में रहते थे और लाटसाहब के दफ्तर में काम करते थे। वह अपने डिपार्टमेंट में सुपरिन्टेंडेन्ट थे। बहुत अच्छे आदमी थे। वह शुद्धि सभा में भी काम करते थे वे मेरे यहां घर पर आया करते थे और जब तब अपनी शंकाओं का समाधान भी किया करते थे। एक बार उन्होंने मुझसे कहा कि 'पण्डित जी एक सवाल है। बड़े दिनों से दिमाग में घूम रहा है उसका समाधान होना चाहिए।' मैंने कहा फर्माईए क्या प्रश्न है? प्रश्न का उत्तर यदि आता होगा तो दे दूंगा।' उन्होंने कहा कि 'मैं समझता कि भगवान् हमारी इच्छाओं को पूरा करने में पूरी तरह नाकामयाब रहा है। क्योंकि हम बहुत सी इच्छाएं करते हैं और हमारी मन की मन में ही रह जाती हैं। हम भगवान् से अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिये भी प्रार्थना करते हैं। पर फिर भी यह पूरी नहीं होतीं। तो क्या मैं इस आधार पर यह नहीं कह सकता हूं कि भगवान् हमारी इच्छाएं पूरी करने में Miserably fail हो गया है। उनके शब्द थे। वह हमारी इच्छाएं पूरी करने में बुरी तरह नाकामयाब रहा है।

प्रश्न मैंने सुन लिया और इसके बाद मैंने कहा कि 'मैं आपके समझने के लिए एक उदाहरण देता हूं। मान लीजिए आप बाजार जा रहे हैं आपका बच्चा आपकी अगुली पकड़े आपके साथ जा रहा है। उसने बाजार में कलमी बड़े देखे। कलमी बड़े बहुत जायकेदार होते हैं किन्तु तेल में बनाए जाते हैं। बच्चे ने आपसे कलमी बड़े दिलवाने के लिए कहा। आपने उसको मना कर दिया और कहा कि तुझ कूकरखांसी Hooping cough है। यह बड़े तेल के हैं तुझे नुकसान करेंगे। इसलिये यह नहीं लेने। बच्चा चुप हो गया। आप

थोड़ा और आगे बढ़े। लेकिन बच्चा पीछे की ओर ही देखता चल रहा है। आपसे फिर बोला पिताजी दो पैसे के तो दिलवा दो। आपको जरा गुस्सा आया, कड़ककर कहा नहीं लेने हैं बेवकूफ इतनी बात समझाई तेरी समझ में नहीं आई। खांसी हो रही है यह नहीं खाने। बच्चा फिर चुप हो गया। आपका एक मित्र बाजार में मिल गया। आप उससे बातें करने लगे। बच्चा बातों के बीच में फिर बोल उठा पिता जी दिलवा दो ना। आपको बहुत गुस्सा आया। आपने बच्चे के एक चांटा रसीद कर दिया और कहा कि तुझे नुकसान करेंगे। बच्चा बिल्कुल चुप हो गया और साथ ही कुछ नाराज हो गया। आप घर आ गए। बच्चा घर आते ही बाहर निकल गया। उसने मुहल्ले के बच्चों को इकट्ठा किया। उनकी एक सभा की और आप बीती सुनाई सभी बच्चों ने भी अपनी-२ बातें सुनाई और कहा कि हां बात बिल्कुल ठीक है कि हमारे मां बाप हमारी इच्छाओं के पूरा करने में पूरी तरह नाकामयाब हुए हैं। सभी ने एक मत होकर एक प्रस्ताव पारित किया और उसकी एक-२ प्रति सभी मां बाप के पास भेज दी कि आप लोग हमारी इच्छाएं पूरा करने में Miserably fail हुए हैं। आपके पास भी एक प्रति उस प्रस्ताव की आई। आपने उसे पढ़ा। पढ़कर रद्दी की टोकरी में डाल दिया। मैंने पूछा कहिए उसे रद्दी की टोकरी में डालेंगे कि नहीं ? उत्तर मिला 'डालेंगे'।

तो वे मुस्कराकर कहने लगे कि क्या भगवान् के सामने ऐसी ही मांगें रखते हैं ? मैंने कहा 'हां' वह यह जानता है कि अमुक मांग बेवकूफाना है इसलिए वह पूरी नहीं होती चाहे हम हजार प्रार्थना करते हैं। वे उचित होंगी तो ही पूरी हो जाएगी वर्ना नहीं। जब मां-बाप ही सभी इच्छाएं पूरी नहीं करते तो ईश्वर जो सर्वज्ञ है वह हमारी सभी उचित अनुचित मांगें कैसे पूरी कर दे ?

ईश्वर से आप मांगते जाइए। केवल आपकी वे ही मांगें पूरी होंगी जो उचित हैं। तो ईश्वर के बारे में कोई निर्णय तुरन्त या बिना सोचे समझे दे देना उसका अपमान करना है। ऐसे नहीं कहना चाहिए बलिक यों कहना चाहिए कि उसने हमें इस योग्य नहीं समझा कि हमारी सभी इच्छाएं पूरी की जाएं। सभी इच्छाएं सबकी कैसे पूरी की जा सकती हैं। हजारों लोग अनेक दफ्तरों में नौकरी प्राप्त करने के लिए प्रार्थना पत्र देते हैं क्या सभी रख लिए जाते हैं? नहीं न, वहां लोग क्या कुछ कसर छोड़ते हैं, पागल हो जाते हैं इतनी कोशिशें करते हैं और अन्त में कह भी देते हैं साहब बहुत कोशिश की लेकिन नौकरी मिलती ही नहीं। खैर यहां तो चुनाव में आने के और भी कारण हो सकते हैं किन्तु वहां तो केवल एक ही कारण है और वह है जीवात्मा की अयोग्यता।

ओ३म् शान्ति:शान्ति:शान्ति।

———